पन्नालाल घोष बड़े-बड़े कलाकारों के वादन सुनते और अपना रियाज बढ़ाते लेकिन उनके इच्छा यही रहती कि और अच्छा शिखे और बनाए इसके लिए वह गुरु की तलाश करते। सौभाग्यवश 1947 ई० में महान कलाकार उस्ताद अलउद्दीन खां से उनकी मुलाकत हुई और उनके शिष्य बन गये। अब उनकी अपनी इच्छापूर्ण हुई और अपने रियाज को बढ़ाते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ने लगें। बाँसुरी वादन में पन्नालाल घोष ने अनेक क्रियाओं का जन्म दिया।

बाँसुरी वादन में गायकी तथा बीन अंग का प्रदर्शन करने के कारण पन्नालाल घोष जी ने श्रोताओं का प्रिय हो गये। अति तार सप्तक तथा अति मंद्र सप्तक में वादन करते समय उन्होंने एक साथ तीन-तीन बाँसुरीओं का प्रयोग इस प्रकार करते थे कि श्रोताओं का थोड़ा भी आभास नहीं होता था। वर्तमान समय पन्नालाल घोष के प्रमुख शिष्यों में श्री देवेंद्र मुडेश्वर बासुरी वादन को रसास्वादन करा रहे हैं. और एक अच्छे बाँसुरी वादक के नाम से प्रसिद्धता प्राप्त किये हैं।

वर्तमान समय में आकाशवाणी के प्रत्येक केन्द्र द्वारा प्रसारित पन्नालाल घोष के बाँसुरी वादन लोग बड़े मन से सुनते हैं।

1960 ई० के 20 अप्रैल अपने 49 वर्ष आयु में रक्तावरोध के कारण उनका स्वर्गवास लाभ किये, लेकिन उनका वादन कला संगीत जगत के मंचस्थल पर सदैव अंकित रहेगा.